यहां उनका भी दिल जोड़ दो

शिवराज आनंद

जिनके दिल टूटे हैं चलते कदम थमे हैं,
वो जीना जानते हैं ।
ना जख्मों को सीना जानते हैं ।।
प्यारे तुम उन्हें भी अपना लो
मेरी बात मान विश्व बंधुत्व का भाव लेकर,
जन- जन से बैर भाव छोड दो ।
"यहा उनका भी दिल जोड़ दो"।।
हम सब के ओ प्यारे,
किस कदर हैं दूर किनारे
जीत की भी आस रखते हैं वे मन मारे ?
ये मन मैले नहीं निर्मल हैं,
सबल न सही निर्बल हैं,
समझते हैं हम जिन्हें नीचे हैं,
वे कदम दो कदम ही पीछे हैं,
जो हिला दे उन्हें ऐसी आंधी का रुख मोड़ दो ।
यहाँ उनका भी दिल जोड़ दो ।।
दिल बिना क्या यह महफ़िल है,
क्या जीने के सपने हैं,
बेगाना कोई नहीं सब अपने हैं.
ये सब मन के अनुभव हैं,
नहीं हूँ अभी वो, पहले मैं था जो,
सुना था मैंने मरना ही दुखद है,
पर देखा लालसाओं के साथ जीना,

Scanned with OKEN Scanner

महा दुखद है.

फिर क्या है सुख ?

क्या जीवन सार ?

सुख है सब के हितार्थ में,

जीवन - सार है अपनत्व में,

ऐसा अपनत्व जो एक दूजे का दिल जोड़ दे ।

कोई गुमनाम न हो नाम जोड़ दे ।।

वरना सब असार है चोला,

सब राम रोला भई सब राम रोला ।।

वैष्णवी खण्डेलवाल

कक्षा - 10

मीरा मॉडल स्कूल , जनकपुरी, दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

उठो युवा तुम उठो ऐसे

उठो युवा तुम उठो ऐसे
चक्रवात में तूफां उठता है जैसे ।।
हां, अब कौन युवा,तुम्हारे सिवा?
रक्षक प्यारे देश का ।
तूं चाहते तो तांडव मचे,
देर है तेरे उस वेष का ।।
अब तो सब से आस भी टूटा ।
बना दिया दुनिया को झूठा ।।
कैसी जननी? कि कैसा लाल?
जो जनकर भी जना क्या लाल?
जो देश की गरिमा बचा सके ।
ध्वंस कर रावण - राज धरा से
एक आदर्श राम - राज्य बना सके ।।
तुम देश के आन हो ।
हिन्दू हो या मुसलमान हो ।
किसी मजहब के नहीं,
"तुम मातृभूमि के लाल हो "।।
तुम कालो के भी महाकाल हो
फिर क्यों अन्जान हो?
क्या नेता - मंत्रियों से परेशान हो?
ओह ! कही विलीन न हो मेरे सपनों का भारत !
हे महारथ! तुझमें है सामर्थ ...रोक दे ए अनर्थ ...।
अगर है मोहब्बत ...तो अपनी यौवन - शक्ति जगा दे ।
आज अपने युग। से भ्रष्टाचार मिटा दे।

Scanned with OKEN Scanner